राष्ट्रभाव को अगर पुष्ट करना है तो यहां की भाषाओं में लिखे हुए ग्रन्थों को समझना ही पड़ेगा। इसलिए हिन्दी, संस्कृत का आग्रह साज़्प्रदायिक कैसे हो जाता है। यह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बलवान करने वाली बात है कि यहां का अध्ययन यहां की भाषाओं में होना चाहिए। अंग्रेजी हमें सीखनी चाहिए, ज़्योंकि हमें दूसरे का विचार भी समझना चाहिए। इजरायल भी भारत के साथ स्वतंत्र हुआ था। दुनिया की कई जगहों से लोग अपनी सज़्पदा छोड़कर इजरायल गए थे। इजरायल में रेगिस्तान है, पानी की कमी है, जमीन की कमी है। शत्रुओं से घिरा देश होने के बाद भी दो-दो हजार, ढाई-ढाई हजार वर्षों से विदेशी जमीन पर रहे और वहां की भाषा और सज़्यता को अपनाए हुए लोग जैसे ही इजरायल अस्तित्व में आया सभी अपनी संपदा छोड़ कर इजरायल पहुंचे और सभी च्यूस ने पहला निर्णय यह लिया कि अपना कारोबार-व्यवसाय हिज़्रु भाषा में करेंगे। आज

50-60 साल में उन्होंने अपनी हिज़्रु भाषा को समृद्ध स्थान दिलाया है। अभी एक परिचित मित्र इजरायल गए। उन्होंने बताया कि बहुत कठिनाई होती है, ज़्योंकि वह अंग्रेजी में बोलते हैं और जवाब हिज़्रु में आता है। तब उन्होंने ठाना कि संवाद के लिए हिज़्रु सीखना पड़ेगा। उन्होंने ज़्लास ली, ज़्योंकि उसके बगैर वह रह नहीं सकते थे। यह असहिष्णुता नहीं है। ये राष्ट्रीय अस्मिता का प्रश्न है। इसको ही सांस्कृतिक राष्ट्रवाद कहते हैं।

भारत का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद दृष्टिकोण का संदेश देने वाला है। संस्कृति ज़्या है? इसको भी समझने की आवश्यकता है। जब हम राष्ट्रवाद की बात करते हैं तो इसका संबंध संस्कृति से आता है। भारतीय और विदेशी संस्कृति में अन्तर है। भारतीय संस्कृति व्यज़्ति को स्थिर करती है। भारत की संस्कृति दुनिया के साथ चलने के लिए लचीला होने की सीख देती है। भारतीय संस्कृति बहुत कम विस्तारवादी है, बहुत कम साम्राज्यवादी है। पश्चिमी संस्कृति अस्थिर है। वह आक्रामक बनाती है। दूसरों के बारे में असहिष्णु, विस्तारवादी बनाती है। दुनिया का इतिहास देखने पर पता चलता है कि पश्चिमी संस्कृति राजनैतिक राष्ट्रवाद की तरफ ले जाती है। जबकि भारतीय संस्कृति सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की ओर ले जाती है। आज पूरी दुनिया में अस्थिरता का कारण ज़्या है? जगह-जगह हिंसा,साज़्प्रदायिक तनाव, जाति का छोटे-छोटे समूह में विभाजन। भारत के बाहर भी संकीर्ण सोच विकसित हुई है। प्रश्न ये है कि ज़्या सारी दुनिया धर्म रहित होनी चाहिए। सारा विश्व राष्ट्र रहित होने का नया विचार चला है। हमें समझना चाहिए कि धर्महीनता मनुष्य को पशुता की तरफ ले जाती है। इसलिए यह अस्वाभाविक है। इसके मूल में जाने पर पता चलता है कि इसका परिणाम यह होगा कि जो सामर्थ्य, सज़्पन्न, शज़्तिशाली होगा उसकी बात चलेगी। ज़्योंकि धर्म, राष्ट्र, सीमा नहीं होने से जो शक्तिशाली है, उसका वर्चस्व है। यह दुनिया में अपना वर्चस्व स्थापित करने का राक्षसी विचार है।

इसलिए पंडित दीनदयालजी ने कहा कि सांस्कृतिक राष्ट्रीय एकात्मता का आग्रह रखना चाहिए। राजनैतिक राष्ट्रवाद से हटकर हम सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को बलवान करें और राष्ट्र की एकात्मता बनी रहे इसका आग्रह करें। दीनदयालजी ने चिति शज़्द का प्रयोग किया है। भारत की चिति ज़्या है? भारत का मानस ज़्या है? भारत का मानस